Online at: https://researchtrendsjournal.com ISSN No: 2584-282X

INTERNATIONAL JOURNAL OF TRENDS IN EMERGING RESEARCH AND DEVELOPMENT

Volume 2; Issue 2; 2024; Page No. 28-31

Received: 15-01-2024
Accepted: 23-02-2024

पाठ्य–पुस्तक क यांत्रिक पक्ष क सन्दभ म शिक्षका को पतिक्रियाआ का अध्ययन

डॉ. मुदिता पोपली, देवेंद्र कुमार

[1]एसोसिएट प्रोफेसर, ग्लोकल स्कूल ऑफ शिक्षा शास्त्र, ग्लोकल यूनिवर्सिटी, मिर्जापुर पोल, सहारनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत
[2]ग्लोकल स्कूल ऑफ शिक्षा शास्त्र, ग्लोकल यूनिवर्सिटी, मिर्जापुर पोल, सहारनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author: डॉ. मुदिता पोपली

सारांश
जीवन में सफलता का आधार वास्तव में शिक्षा में निहित है। समय के साथ–साथ शिक्षा के उद्देश्य भी बदलते रहते हैं। स्वतन्त्रता के बाद भारत में शिक्षा को सामाजीकरण का सशक्त साधन मानते हुए इसके द्वारा वैयक्तिकता व नागरिकता के गुणों को विकसित करने का प्रयत्न किया गया। आजकल हम शिक्षा को व्यवसायोन्मुख करने का यत्न कर रहे हैं। उत्तम सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण व हस्तांतरण पर भी ध्यान दिया जा रहा है। शिक्षा मानव जीवन का एक सुसंस्कृत एवं महत्वपूर्ण पक्ष है। इसके द्वारा मानव अपना आर्थिक विकास करता है एवं जीवन में पूर्णता प्राप्त करता है। शिक्षा के द्वारा ही संसार को आर्थिक, वैज्ञानिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक उन्नति होती है। स्वामी विवेकानन्द ने कहा था–'हमें वह शिक्षा चाहिए जिससे कि चरित्र बनता है, मन की शक्ति बढ़ती है, प्रतिभा का विस्तार होता है और आदमी अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है।'

मुख्य शब्दः सामाजीकरण, वैयक्तिकता, व्यवसायोन्मुख, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, प्रतिभा, चरित्र।

प्रस्तावना
शिक्षा मानव समाज की संरचना एवं व्यक्ति के भावी जीवन के दिशा निर्देशन का मूल आधार है। अतः शिक्षा का स्वरूप इतना व्यापक होना आवश्यक है जिससे अपेक्षाओं एवं उद्देश्यों की प्रतिपूर्ति हो सके। पूर्व माध्यमिक स्तर पर शिक्षार्थी निश्चय ही ज्ञान एवं चिन्तन की ओर अग्रसर होकर विषय को गहनता से समझने में रूचि लेने लगता है। उसकी कल्पना–शक्ति का विकास होने लगता है तथा जीवन के प्रत्येक रहस्य को जानने की जिज्ञासा प्रबल होने लगती है।
मनुष्य में संग्रह की मूल प्रवृत्ति जन्मजात होती है। इसी मूल प्रवृत्ति के सन्तोष के लिए मनुष्य कुछ ना कुछ वस्तुयें संग्रहीत करते रहते हैं। मनुष्य अपने ज्ञान एवं अनुभवों को भी संचित करता है। इसी से आज हमारे पास मानव–सभ्यता और संस्कृति के विकास से सम्बन्धित निधियाँ संचित हैं। पुस्तकें भी इन्हीं संग्रहीत निधियों में से एक हैं। मनुष्य ने अपने अर्जित अनुभवों और ज्ञान को भावी संतति के लिये संचित रखने के लिये उसे लिपिबद्ध किया है। यही लिपिबद्ध प्रयास आज हमें पुस्तकों के रूप में मिलता है। पुस्तकों द्वारा ज्ञान को संचित ही नहीं किया जाता है अपितु इन पुस्तकों के माध्यम से नई पीढ़ी को ज्ञान दिया जाता है।
पाठ्य–पुस्तकों का एक ऐसा प्रकार हैं, जिनमें मौलिक और स्थायी महत्व की पुस्तकों से कुछ सामग्री चयन करके विविध स्तरों के विद्यार्थियों के लिए हम पुस्तकों के रूप में व्यवस्थित कर लेते हैं। शिक्षक अपने शिक्षण की तैयारी में इनका प्रयोग करता है तथा छात्र परीक्षा की तैयारी के लिए इनका अध्ययन करता है। इन पाठ्य पुस्तकों का विद्यार्थियों के लिये अत्यधिक महत्व होता है। पुस्तकें हमारे जीवन का अविच्छिन्न अंग बन चुकी हैं। स्त्री–पुरूष का जीवन पुस्तकों के अभाव में प्रायः शून्यवत् है। पुस्तकें हमारा जीवन हैं, प्राण–दायिनी शक्तियों का स्रोत हैं, दुख–सुख की संगिनी और मार्ग–दर्शिका हैं। पुस्तकों के अभाव में हम अतुल विचार और ज्ञान के उस प्रकाश पुंज से वंचित रह जायेंगे जिसे हमारे कर्मठतापूर्ण पुरूषों ने, तत्ववेत्ता ऋषि–महर्षियों ने, तपस्वी महात्माओं ने मननशील विद्वान मनीषियों ने, मौलिक विचारकों ने, कुशल राजनीतिज्ञों ने समय–समय पर समाज और जगत के हितार्थ लिपिबद्ध किया है तथा जो आज कागज, मुद्रण–कला एवं अन्य साधनों के आविष्कार के कारण हमें सहज ही उपलब्ध हैं। उनके ज्ञान और अनुभव से संचित ये अमूल्य धरोहरें पुस्तकों के रूप में हमारे समक्ष प्रस्तुत हैं जिन्हें जिज्ञासु बनकर अध्ययन करने पर किसी भी क्षण उस वस्तु से हम अपना ज्ञान और अनुभव बढ़ा सकते हैं और अपना दुरूह मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं। पुस्तकों के अध्ययन, चिन्तन और मनन से मनुष्य की ज्ञान–परिधि विस्तृत होती है तथा वह अपनी शक्तियों से परिचित होकर आत्म विकास के लिए सचेष्ट एवं सक्रिय होता है। पुस्तकों को आधार मानकर ही हम आत्म–चिंतन और मानसिक

शान्ति का प्रयास करते हैं। वर्तमान में बुद्धिजीवी युग में पुस्तकों से अलग रहकर ज्ञानार्जन की दिशा में प्रगति करने, विषय–वस्तु की तह में जाने की कल्पना कठिन ही नहीं होती अपितु असम्भव है।

हम लोग सोचते हैं, अध्ययन करते हैं और चिन्तन तथा मनन करने के पश्चात् किसी निर्णय पर पहुँचते हैं। यह निर्णय हमारी अनुभूतियों एवं अर्जित ज्ञान पर ही आधारित रहता है। यदि हमारी अर्जित ज्ञान की परिधि सीमित हो तो हमारा भाव जगत संकुचित और हमारा निर्णय दोषपूर्ण होगा। अतः शिक्षा–शास्त्रियों, मनीषियों एवं विद्वानों का यह कर्तव्य है कि वे ऐसी पुस्तकों का निर्माण करें जिनके अध्ययन से हमारे ज्ञान का विस्तार हो तथा भावी जगत उन्नत एवं विशाल हो।

मानव सभ्यता के प्रारम्भ में ज्ञान मौखिक रूप से दिया जाता था। लिखने की कला का विकास लगभग छः हजार वर्ष पूर्व ही हुआ। इससे पहले ज्ञान को कंठस्थ करने की ही व्यवस्था थी। वैदिक काल में भी वेदों के श्लोकों को गुरू द्वारा शिष्यों को कंठस्थ कराया जाता था।

प्राचीन तथा मध्यकाल में पुस्तकें भोज–पत्रों और ताम्र–पत्रों पर तैयार की जाती थीं। ये पुस्तकें हस्तलिखित होती थीं और इनकी संख्या इतनी कम होती थी कि वे प्रत्येक विद्यार्थी को उपलब्ध नहीं थीं। इसी से इस काल में मौखिक शिक्षा की व्यवस्था थी। जब कागज का आविष्कार हुआ, तब पुस्तकों का मनचाही प्रतियों में छपना सम्भव हो सका। पाठ्यक्रम को ध्यान में रखकर पाठ्य–पुस्तकों के विकास का इतिहास सोलहवीं शताब्दी से प्रारम्भ होता है। सर्वप्रथम, कमेनियस (1592–1600 ई॰) ने भाषा शिक्षण की पाठ्य पुस्तक लिखी थी। इसके बाद पाठ्य पुस्तकों के महत्व को देखते हुए इसका प्रचलन बढ़ता गया तथा अनेक शिक्षाविदों एवं विषय–विशेषज्ञों द्वारा पाठ्य–पुस्तकें लिखी जाने लगीं।

19वीं शताब्दी में फ्रोबेल, डीवी तथा महात्मा गांधी ने पुस्तकीय ज्ञान का विरोध किया तथा अनुभव–केन्द्रित एवं क्रिया–प्रधान शिक्षा पर बल दिया। परिणामस्वरूप पाठ्य–पुस्तकों के महत्व को कम समझा जाने लगा, किन्तु तथ्यों, सिद्धान्तों आदि के बोधगम्यता की दृष्टि से इनकी पूर्ण उपेक्षा नहीं की जा सकी।

कुछ शिक्षा शास्त्रियों ने पुस्तक विहीन शिक्षण के भी प्रयोग किये किन्तु वे भी इसी निष्कर्ष पर पहुँचे कि पाठ्य–पुस्तकों का अंत नहीं हो सकता। अतः अब यह सिद्ध हो चुका है कि पाठ्य–पुस्तकों के अभाव में शिक्षण प्रक्रिया सम्भव नहीं है।

भारत में पाठ्य–पुस्तकों के निर्माण का इतिहास अधिक पुराना नहीं है। ईस्ट इण्डिया कम्पनी के शासनकाल में सबसे पहला मुद्रणालय सन् 1824 ई0 में कलकत्ता में स्थापित हुआ जिसका नाम था 'कलकत्ता शिक्षा–प्रेस'। इसी से भारत में पुस्तकों की छपाई का काम प्रारम्भ हुआ। सन् 1854 ई0 में वुड के घोषणा–पत्र में पाठ्य–पुस्तकों के प्रकाशन की संस्तुति हुई तो अंग्रेजी, संस्कृत और फारसी में कुछ पुस्तकें प्रकाशित हुई। किन्तु किसी भी आयोग ने तब पाठ्य–पुस्तकों के गठन पर बल नहीं दिया क्योंकि सन् 1882 के भारतीय शिक्षा आयोग, सन् 1918 के कलकत्ता विश्वविद्यालय आयोग, सन् 1929 की हर्टाग समिति तथा सन् 1936–37 ई0 की वुड एवट रिपोर्ट में पाठ्य पुस्तकों की रचना और सुधार के सम्बन्ध में कोई सुझाव नहीं मिलता। सन् 1910 ई0 के बाद भारतीय नेताओं ने शिक्षा की ओर ध्यान तो दिया परन्तु वे भी पाठ्य–पुस्तकों की समस्या तक अन्य बाधाओं के कारण नहीं पहुँच सके।

सन् 1935 ई0 में 'गवर्नमेन्ट ऑफ इण्डिया एक्ट' के अनुसार जब कुछ प्रान्तों में स्वायत्त शासन का प्रारम्भ हुआ तो कुछ राष्ट्रीय नेताओं ने पाठ्य–पुस्तकों की रचना और सुधार पर भी ध्यान दिया। सन् 1937–38 ई0 की प्रथम आचार्य नरेन्द्रदेव समिति ने पाठ्य–पुस्तकों के सम्बन्ध में कुछ सुझाव दिये। सन् 1952–53 में मुदालियर आयोग की स्थापना हुई। उसने प्रचलित पाठ्य पुस्तकों की आलोचना करते हुये उनमें सुधार लाने पर बल दिया। पाठ्य–पुस्तकों से सम्बन्धित एक समिति के गठन पर भी बल दिया।

सन् 1954 ई0 में फोर्ड फाउण्डेशन के अन्तर्गत एक अन्तर्राष्ट्रीय दल ने प्रचलित भारतीय पाठ्य–पुस्तकों का निरीक्षण किया। उसने सुझाव दिया कि भारतीय सरकार प्रकाशन और लेखन सम्बन्धी कुछ नियम बनाये और उन्हीं के अधीन प्रकाशक एवं लेखक पुस्तकें तैयार करें। परन्तु सरकार इनके प्रकाशन का उत्तरदायित्व अपने हाथ में न ले।

सन् 1964–66 ई0 में कोठारी आयोग ने पाठ्य–पुस्तकों पर अधिक ध्यान दिया। उसने कहा कि उच्च कोटि के विद्वान पाठ्य–पुस्तकों की रचना में रूचि लेते तथा सम्बन्धित अधिकारी पाठ्य–पुस्तकों की स्वीकृति एवं चुनाव में बेईमानी करते हैं। अतः इस क्षेत्र में अनुसंधान की बहुत आवश्यकता है तथा पाठ्य–पुस्तकों का प्रकाशन सरकारी शिक्षा विभाग द्वारा किया जाना चाहिये।

शैक्षिक तकनीकी के विकास से पाठ्य पुस्तकों के लिखने के ढंग में भी परिवर्तन हुए हैं। हमारे देश में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् (एन॰सी॰ई॰आर॰टी॰), नई दिल्ली द्वारा भी इस क्षेत्र में कार्य किया जा रहा है। इस प्रकार परम्परागत पाठ्य–पुस्तकों के साथ–साथ इनके कई तरह के नवीन रूप भी प्रस्तुत किये गये हैं उत्तर प्रदेश में बेसिक शिक्षा परिषद् द्वारा पाठ्य–पुस्तकों का निर्माण कार्य किया जाता है।

सामाजिक विज्ञान पाठ्य–पुस्तकों की उपयोगिता

सामाजिक विज्ञान में भी पाठ्य–पुस्तकों की अत्यधिक उपयोगिता एवं महत्ता है। बालक–बालिकाओं को सामाजिक विज्ञान का यथोचित ज्ञान देने के लिए पाठ्य–पुस्तकें एक उत्तम, उपयोगी और आवश्यक उपकरण हैं। इनसे इतिहास, भूगोल, नागरिक शास्त्र एवं अर्थशास्त्र आदि के शिक्षण की व्यवस्था सुलभ हो जाती हैं। सामाजिक विज्ञान में पाठ्य–पुस्तकों का प्रमुख कार्य मात्र सूचनायें देना नहीं होता, बल्कि सूचनाओं के माध्यम से विद्यार्थियों को सीखने की ओर प्रवृत्त करते हुए उन्हें देश सम्बन्धी योग्यताओं की प्राप्ति में सहायता करना होता है। देश के क्षेत्र सम्बन्धी ज्ञान एवं योग्यता की अभिवृद्धि ही पाठ्य–पुस्तक का प्रधान कार्य है।

सम्बन्धी साहित्य का सर्वेक्षण:

अन्वेषण कार्य में प्रस्तुत शोध विषय के गहन विज्ञान के बाद अन्वेषण से सम्बन्धित साहित्य की समालोचना एक महत्वपूर्ण दृष्टिकोण है जो कि प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से शोध–कार्य पर प्रभाव डालती है। प्रत्येक शोध–अध्ययन नये विचारों, नये ज्ञान, नयी योजनाओं में सहयोग देता है। अतः यह बहुत ही आवश्यक हो जाता है कि सम्बन्धित क्षेत्र के ज्ञान, विचार तथा शोध का गहराई से अध्ययन करें जो कि इसे आगे बढ़ाता है। समालोचना केवल सिद्धान्तरूप से ही महत्वपूर्ण नहीं है, वरन् यह सम्बन्धित विषय क्षेत्र के अन्तःदृष्टिज्ञान को उजागर करता है तथा सम्बन्धित शोध के लिए सैद्धान्तिक आधार तथा अध्ययन से सम्बन्धित कार्य–विधि के लिये उपयुक्त साधन चुनने में सहायक होता है। समालोचना की महत्ता के बारे में बैस्टा ने लिखा है :–

'विषय से सम्बन्धित साहित्य का गहन अध्ययन करने से शोधकर्ता को पता चल जाता है कि सम्बन्धित क्षेत्र में क्या–क्या कार्य हो चुका है और उनके क्या निष्कर्ष निकले तथा सम्बन्धित क्षेत्र में किस पद्धति का प्रयोग किया जाये तथा सम्बन्धित क्षेत्र में कौन–कौन सी अनसुलझी समस्याऐं रह गयी हैं।' (बेस्ट0 जॉन0

डब्लू, रिसर्च इन एजूकेशन, थर्ड एडीशन, प्रेन्टिस हॉल ऑफ इंडिया प्राईवेट लिमिटेड, न्यू देहली, 1978)।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

शिक्षा एक ऐसा सबल माध्यम है जिसके द्वारा हमारी सम्यता, संस्कृति और परम्पराएँ पीढ़ी–दर–पीढ़ी स्थानान्तरित होती रहती हैं। पाठ्य–पुस्तक संस्कृति एवं परम्पराओं में बदलाव लाने में महत्वपूर्ण साधन का काम करती हैं। यह ज्ञान का एक संक्षिप्त रूप हैं, जिन्हें शिक्षा प्राप्ति के एक साधन के रूप में प्रयोग किया जाता है। यह राष्ट्रीय संस्कृति का प्रतीक है। देश के विचार, आदर्श, मूल्य तथा प्रतिमान आदि को पाठ्य–पुस्तकों द्वारा सरलता पूर्वक जाना जा सकता है। पाठ्यक्रम में निहित अनुभवों के संकलन, लिखित प्रस्तुतीकरण सीखे हुए ज्ञान की पुनरावृत्ति और अप्रत्यक्ष रूप से ज्ञान प्राप्त करने की दृष्टि से पाठ्य–पुस्तकें अपरिहार्य हैं। पूर्व माध्यमिक स्तर पर छात्र लेखन एवं पठन की किंचित दक्षता प्राप्त कर लेता है। अतः इस स्तर पर पाठ्य–पुस्तकों में भाषायी पक्ष के साथ–साथ स्तरानुकूल सटीक जानकारी का समावेश भी महत्वपूर्ण है। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए "पूर्व माध्यमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान की पाठ्य पुस्तकों का मानकों के परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन" के अध्ययन की आवश्यकता महसूस की गयी। यह ज्ञात करना आवश्यक है कि वर्तमान पूर्व माध्यमिक स्तर की सामाजिक विज्ञान की पाठ्य पुस्तकें इस स्तर के लिए पूर्णरूप से उपयोगी हैं या नहीं।

पाठ्य–पुस्तकों के मूल्यांकन के लिए मानदण्ड

पाठ्य–पुस्तकों का चुनाव तथा निर्धारण करने से पूर्व यह आवश्यक है कि वस्तुनिष्ठ मानदण्डों के आधार पर उनका मूल्यांकन किया जाये। किसी भी पुस्तक का मूल्यांकन करने के लिए निम्न मानदण्ड स्थापित किये जा सकते हैं यथाः–

1. **पुस्तक का यांत्रिक पहलूः** इसके अन्तर्गत पाठ्य–पुस्तक का बाहय स्वरूप, आकार, पृष्ठ संख्या, जिल्द, कागज की किस्म, छपाई की स्पष्टता, सज–धज तथा हाशिया आदि सम्मिलित हैं।
2. **पाठ्य पुस्तक की व्यवस्थाः** इस मानदण्ड के अनुसार पाठ्य–पुस्तक के भीतर विषय का विभाजन, उसकी श्रृंखलाबद्धता, तार्किकता, सारांश तथा अभ्यासार्थ प्रश्नों की व्यवस्था पर ध्यान दिया जाता है।
3. **प्रस्तुतीकरणः** इसके अन्तर्गत पाठ्य–पुस्तक की भाषा–शैली, उसमें प्रयुक्त शब्दावली, प्रतिपादन पद्धति, विषय की स्पष्टता एवं बोधग्राहयता आदि निहित हैं।
4. **उदाहरणः** इसके अन्तर्गत चित्रों, रेखाचित्रों, मानचित्रों तथा चार्टों की शुद्धता, उपयोगिता, स्पष्टता, रोचकता, वस्तुनिष्ठता यथास्थानता तथा आकार आदि पर विचार किया जाता है। पाठ्य–पुस्तक के लिए ये अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं।
5. **अभ्यासार्थ प्रश्नः** प्रत्येक पाठ के अंत में दिये गये अभ्यासार्थ प्रश्नों का विषय–वस्तु से सम्बन्ध, उनकी व्यापकता, प्रेरणात्मक शक्ति, स्पष्टता, शुद्धता, विश्वसनीयता तथा कठिनाई स्तर निर्धारित करना आवश्यक है। अभ्यासार्थ प्रश्नों का मूल्यांकन इन्हीं दृष्टियों से किया जाता है।
6. **सहायक ग्रन्थों की सूचीः** पाठ्य–पुस्तक में प्रस्तुत सहायक ग्रन्थों की सूची तथा निर्देशन की छात्रों तथा शिक्षकों की दृष्टि से उपयोगिता, उसकी व्यवहारिकता, निश्चितता, उपलब्धता, विश्वसनीयता एवं वैधता पर विचार करना परमावश्यक है।
7. **अनुक्रमाणिका एवं विषय–सूचीः** इसके अन्तर्गत पाठ्य–पुस्तक के अन्दर दी हुई विषय–सूची की पूर्णता, स्पष्टता, व्यवस्था, व्यवहारिक उपयोगिता तथा संगठन आदि पर ध्यान दिया जाता है।
8. **लेखकः** इसके अन्तर्गत लेखक की योग्यता, लेखन तथा शिक्षण अनुभव, व्यावसायिक प्रशिक्षण तथा वर्तमान व्यवसाय आदि पर विचार करना होता है।

उपरोक्त मानदण्डों पर ध्यान देते हुए पंच पद रेटिंग स्केल के रूप में पाठ्य–पुस्तकों का मूल्यांकन सम्भव है और प्रत्येक पाठ्य–पुस्तक के सम्बन्ध में अंक निर्धारित किये जा सकते हैं। पंच पद रेटिंग स्केल का स्वरूप निम्न होता हैः–

Table 1: वर्गक्रम अंक

वर्गक्रम	अंक
सर्वोत्तम	5
अच्छा	4
साधारण	3
निकृष्ट	2
निकृष्टतम	1

उपरोक्त मानदण्ड के अनुसार पाठ्य–पुस्तक की रेटिंग इन पाँच पदों में की जायेगी। रेटिंग के बाद उन्हें आंकिक रूप में परिवर्तित कर दिया जायेगा। इस रेटिंग स्केल में आठ मानदण्ड दिये गये हैं। इन मानदण्डों के अनुसार आगे के खानों में रेटिंग करना है। रेटिंग प्रदर्शित करने के लिए (✓) चिन्ह का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरणः– पाठ्य–पुस्तक का शीर्षक "A"

Table 2: सर्वोत्कृष्ट अच्छा साधारण निकृष्ट निकृष्टतम

क्र॰ सं॰	मानदण्ड	सर्वोत्कृष्ट (अंक 5)	अच्छा (अंक 4)	साधारण (अंक 3)	निकृष्ट (अंक 2)	निकृष्टतम (अंक 1)
1.	पाठ्य–पुस्तक का यांत्रिक पक्ष		✓			
2.	पाठ्य–पुस्तक की व्यवस्था			✓		
3.	प्रस्तुतीकरण			✓		
4.	उदाहरण			✓		
5.	अभ्यासार्थ प्रश्न			✓		
6.	सहायक ग्रन्थों की सूची			✓		
7.	विषय–सूची				✓	
8.	लेखक		✓			
	कुल योग		8	15	2	

हस्ताक्षर रेटिंगकर्त्ता

अंकों का कुल योगः 8 + 15 + 2 = 25

प्रतिशत रेटिंगः 25 ÷ 40 × 100 = 62.5% (अच्छा)

इस प्रकार रेटिंग करने के बाद इन्हें अंकों में परिवर्तित किया जाता है। उक्त पाठ्य–पुस्तक शीर्षक श।श का मूल्यांकन करने के लिए आठों मानदण्डों के रेटिंग अंक न्यूनतम आठ तथा अधिकतम चालीस हैं। उक्त पाठ्य–पुस्तक शीर्षक श।श का रेटिंग करने के पश्चात् हम इस निष्कर्ष पर आते हैं कि यह पुस्तक साधारण से कुछ अच्छी है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. उत्तर प्रदेश में पूर्व माध्यमिक स्तर पर बेसिक शिक्षा परिषद द्वारा निर्धारित सामाजिक विज्ञान की पाठ्य–पुस्तकों का मानकों के परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन करना ।
2. एन॰सी॰ई॰आर॰टी॰ द्वारा प्रकाशित पूर्व माध्यमिक स्तर की सामाजिक विज्ञान की पाठ्य–पुस्तकों का मानकों के परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन करना ।
3. मानकों के परिप्रेक्ष्य में उक्त दोनों पाठ्य–पुस्तकों की तुलना करना ।
4. पाठ्य–पुस्तकों के मानकों के सन्दर्भ में शिक्षकों की प्रतिक्रियाओं का अध्ययन ।
5. एन॰ सी॰ ई॰ आर॰ टी॰ व बेसिक शिक्षा परिषद् की सामाजिक विज्ञान की पाठ्य–पुस्तकों का मूल्यों के सन्दर्भ में अध्ययन करना।

अध्ययन विधि

इस शोध अध्ययन में पूर्व माध्यमिक स्तर पर बेसिक शिक्षा परिषद उत्तर प्रदेश तथा एन॰ सी॰ ई॰ आर॰ टी॰ की सामाजिक विज्ञान की पाठ्य–पुस्तकों की विषय–वस्तु का विश्लेषण किया जायेगा तथा सर्वेक्षण–विधि का प्रयोग किया जायेगा। पाठ्य–पुस्तकों का मूल्यांकन पांच बिन्दुओं पर आधारित मापक द्वारा किया जायेगा जो एन॰सी॰ई॰आर॰टी॰ द्वारा निर्धारित है।

अध्ययन उपकरण

पूर्व माध्यमिक स्तर के सामाजिक विज्ञान के शिक्षकों से प्रश्नावली के द्वारा उत्तर प्राप्त किये जायेंगे। प्रश्नावली के द्वारा प्राप्त उत्तरों से प्रतिशत निकालकर निष्कर्ष निकाला जायेगा। आंकड़े एकत्र करने के लिए शोधकर्ता द्वारा तैयार प्रश्नावली का प्रयोग किया जायेगा।

सन्दर्भ

1. डॉ. ए. पी. शर्माः भारतीय शिक्षा की समस्याएँ, अशोक पब्लिशिंग हाऊस, 83, गांधीनगर, मेरठ
2. डॉ. आर. ए. शर्माः शिक्षा और मनोविज्ञान में प्रारम्भिक सांख्यिकी, आई0 पी0 एच0, मेरठ
3. ऑल इण्डिया बोमन कांफ्रेंसः वोमन एण्ड सोशल इन जस्टिस, नव जीवन प्रेस, अहमदाबाद
4. बुच एम. वी. (एडी): थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, न्यू दिल्ली, एन. सी. ई. आर. टी. 1997.
5. बुच एम. वी. (एडी): फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, न्यू दिल्ली, एन. सी. ई. आर. टी. 2019.
6. बुच एम. वी. (एडी): फिफ्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, न्यू दिल्ली, एन. सी. ई. आर. टी. 2005.
7. पाठक, पी. डी. एण्ड त्यागी, जी0 एस0 डी0, 'इण्डियन एजूकेशन कमीशन एण्ड कमेटीज' आगरा : विनोद पुस्तक मन्दिर, 2016.
8. मिनीस्टरी ऑफ एच. आर. डी. गवर्नमेन्ट ऑफ इण्डिया, 'नेशनल पॉलिसी ऑन ऐजूकेशन, 2006।
9. सामाजिक विज्ञान शिक्षण, बी. के. माहेश्वरी, बी0 एल0 शर्मा
10. सामाजिक विज्ञान शिक्षण, डॉ. सोती शिवेन्द्र चन्द्र, वीरेन्द्र वर्मा
11. सामाजिक विज्ञान शिक्षण, प्रो. भंवर लाल गर्ग

Creative Commons (CC) License
This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.